Lecture - 105.

बिहार में शिक्षा के विकास पर टिप्पणी

— Mamta Rani
Guest Assist. Prof.
SNSRKS College.
Saharsa.
Deptt. of History.
(Modern History)

वुडस्डिस्पैच 1854 में लाया गया और विश्व-विद्यालय शिक्षा पर जोर दिया गया जिसका परिणाम 1857 में कलकत्ता विश्व विद्यालय की स्थापना था। 1849 ई० में सर्वेक्षण के अनुसार बिहार में मात्र 0.7% महिलाएँ साक्षर थी। ब्रिटिश सरकार के द्वारा 1813 के Act में पहली बार शिक्षा के लिए 1 लाख रू० की व्यवस्था किया गया। यह स्पष्ट है कि अंग्रेजी सरकार के पाश्चात्य और तकनीकि शिक्षा के लिए जो भी कार्य किया उसमें अपने हित के लिये किया।

इसी क्रम में 1863 में पटना के कॉलेज की स्थापना, 1917 में सैडलर आयोग की रिपोर्ट के आधार पर 1917 में पटना विश्व-विद्यालय की स्थापना। 1817 में कला और 1919 में विज्ञान विषय की पढ़ाई भी प्रारंभ हो गई। 1928 में पटना साईंस कॉलेज की स्थापना किया गया। 1928 में ही पटना में पशु चिकित्सा कॉलेज की स्थापना भी कर दिया गया। 1926 में धनबाद में इण्डियन स्कूल ऑफ माइंस की स्थापना तकनीकी शिक्षा की महत्वपूर्ण उपलब्धि था। 1947 में दरभंगा मेडिकल कॉलेज की स्थापना भी कर दिया गया।

सरकार के साथ-साथ इसाई मिशनरी और आर्य समाज तथा ब्रह्म-समाज ने भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया बालिकाओं के शिक्षा पर भी ध्यान दिया गया। और मदरसा तथा स्कूल की स्थापना की गई। और पटना के साथ-साथ में आर्य-कन्या विद्यालय की स्थापना आर्य समाज द्वारा D.A.V श्रृंखला के स्कूल और वि. ब्रह्मसमाज के द्वारा पटना में राजा राम मोहन राय सेमीनरी की स्थापना किया। इस्लाम धर्म के राष्ट्रवादी ने भी इसी सहयोग किया जैसे मौ० इमदाद अली ने 1873 में मुजफ्फरपुर में बिहार साइंटिफिक स्कूल की स्थापना किया। पटना में 1876 में बिहार हिन्दु अरेबिक स्कूल को भी स्थापित किया गया।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल एवं मध्य काल में बिहार शिक्षा के मामलों में बहुत आगे था लेकिन अंग्रेजी नीति एवं वर्तमान में राजनीतिज्ञों के चलते इस क्षेत्र में सबसे पिछड़ा राज्य बना है अतः इसमें सुधार की बहुत अधिक गुंजाइश बनती है जिसमें सरकार भी काम कर रही है।

बिहार प्राचीन काल से अतिमहत्वपूर्ण राज्य के रूप रूप में स्थापित है। यह और बात है कि वर्तमान में इस क्षेत्र में चलते हुए के राज्य में बना हुआ है। इसी परिपेक्ष्य में बिहार के शिक्षा एवं साहित्य का अध्ययन किया जा सकता है। अध्ययन की सुविधा के लिए इसको तीन भाग में हमलोग विभाजित कर सकते हैं —

1. प्राचीन भारत 2. मध्यकालिन भारत 3. आधुनिक भारत

बिहार वर्तमान में भले ही शिक्षा के क्षेत्र में अंतिम पायदान पर है लेकिन प्राचीन काल में इसका सर्वोच्च स्थान था। गुप्त काल में कुमार गुप्त प्रथम के द्वारा स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय भारत की सबसे प्राचीन विश्व विद्यालय है। जहाँ व्हेनसांग विद्वान ने शिक्षा ग्रहण किया था। इसी क्रम में पाल वंश के शासक गोपाल ने ओदंतपुरी महाविहार और धर्मपाल ने भागलपुर में समिप विक्रमशिला विश्व विद्यालय की स्थापना कराया। इस काल में संस्कृत सर्वोपरि भाषा के रूप में स्थापित था। इसके बाद प्राकृत या अर्द्धमगधी भाषा का प्रयोग किया जाता था। भारत के शेक्सपियर कालिदास की विश्व प्रसिद्ध पुस्तक अभिज्ञानशाकुंतलम को बाइबिल के बाद दुसरा स्थान दिया गया है। जो बिहार के शिक्षा एवं साहित्य को उजागर करता है।

प्राचीन काल में जिस शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में बिहार ने अपना सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था वह मध्य काल में दिखाई पड़ता है लेकिन क्षेत्र अब सीमित हो गया था। सल्तनत काल में बिहार शरीफ प्रशासनिक इकाई के साथ-साथ शिक्षण स्थान के रूप में भी विख्यात था। मुगल काल के अजीमाबाद शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किए हुए था साथ ही अब फारसी भाषा राजकीय भाषा के रूप में स्थापित हो गया था लेकिन अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी स्वतंत्रता प्राप्त था। अमिर खुसरो एवं अबुलफजल जैसे विद्वानों का नाम लिया जा सकता है। महाभारत जैसे ग्रंथ का रज्मनामा नाम से बदायुं ने फारसी भाषा में अनुवाद भी किया था।

युरोपियों के आगमन के साथ भारत सहित बिहार में भी शिक्षा के क्षेत्र में एक नई परंपरा की शुरूआत हुआ। 1835 के मैकाले रिपोर्ट के आधार पर अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बना दिया गया। इसी कि समिक्षा के लिए

Q. बिहार में शिक्षा के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

उत्तर → बिहार में शिक्षा का विकास

प्राचीन भारत

* नालंदा महाबिहार
* विक्रमशीला महाविहार
* ओदंतपुरी महाविहार

- - - - - -

गुप्तकाल मे संस्कृत भाषा का प्रथम स्थान प्राकृत का 2nd स्थान

जैसे- कालीदास की अभिज्ञानशाकुंतलम्

मध्यकालीन भारत

* बिहारशरीफ - (सलतनत काल)
* आजिमाबाद (पटना) - मुगलकाल
* फारसी भाषा का 1st स्थान
* अन्य क्षेत्रिय भाषा
* अमीर खुसरो

अबुल फजल

कुछ संस्कृत ग्रंथ का फारसी मे अनुवाद जैसे- रजमनामा

आधुनिक भारत

* अंग्रेज - पाश्चात्य शिक्षा पर जोर
* 1935 मे अंग्रेजी भाषा अनिवार्य
* 1854 के वुडडिस्पेच के आधार पर 1857 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्थापना
* 1844 मे बिहार मे महिलाओ 0.7% साक्षर
* 1917 मे पटना विश्व विद्यालय की स्थापना।
* 1917 मे सैडलर आयोग - 1917 मे कला, 1919 मे विज्ञान संकाय की स्थापना।
* 1926 मे धनबाद इण्डियन स्कूल ऑफ माइन्स की स्थापना।
* 1947 मे दरभंगा मेडिकल कॉलेज
* इसाई मिशनरी - मदरसा / स्कूल

आर्य समाज, ब्रह्मसमाज

D.A.V राजा राममोहनराय सेमीनरी, पटना

* मु० इमदाद अली - मुजफ्फर मे बिहार साइंटिफिक स्कूल की स्थापना
* पटना - 1876 - बिहार हिन्दू - अरेबिक स्कूल की स्थापना

- - - - - -

निष्कर्ष- लेकिन अभी बिहार का शिक्षा सबसे अंतिम स्थान। इसलिए अभी और सुधार करने की जरूरत बनती है।

भारत के इतिहास मे बिहार की अहम भूमिका प्रत्येक क्षेत्र मे दिखाई पड़ता है। कला एवं संस्कृति, राजनीतिक उपलब्धि, आर्थिक समृद्धि के साथ - साथ शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र मे भी